Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुद्ध के मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

नन्द कुमार मिश्रा *

शोध–सारांश

किसी भी मनुष्य, समाज या फिर देश के सर्वांगीण विकास के लिए केवल भौतिक विकास पर्याप्त नहीं है, इसके लिए नैतिक विकास का होना भी अति आवश्यक है। भारत के प्राचीन इतिहास के पृष्ठ पलटें तो हम पातें हैं कि यह देश सदियों से मानवीय मूल्यों का हामी रहा है। हमारी संस्कृति नैतिक आचार–विचार व व्यवहार का पालन करने के लिए सदैव प्रेरित करती है। हमारे इतिहास में ऐसे अनेक ऋषि मुनियों, महापुरूषों व श्रेष्ठ साधकों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों के रक्षार्थ समर्पित कर दिया और सम्पूर्ण समाज को जीवन के प्रति एक नयी दिशा दी। इस कड़ी में महात्मा बुद्ध का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। बुद्ध ने मानवीय मूल्यों पर बहुत जोर दिया था। परिणामतः त्याग, आत्म–संयम, अहिंसा आदि उच्च आदर्शों ने भारतीय समाज के नैतिक स्तर को अत्यन्त ऊँचा उठाया। महायान सम्प्रदाय वालों ने बोधिसत्व के रूप में लोक सेवा का उच्च आदर्श जनता के सम्मुख रखा। वर्तमान परिप्रेक्ष में जहां सम्पूर्ण विश्व, समाज एवं देश भौतिकतावाद की ओर अग्रसर है उसमें नैतिक मूल्यों, खासकर बुद्ध के मानवीय मूल्यों का समावेश अति आवश्यक है। अन्यथा बिना मूल्य के मानव समाज पशुवत–समाज की ओर अग्रसर हो जायेगा। आज जब सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद की विभीषिका से ग्रसित है तो यहां बुद्ध के मानवीय या नैतिक मूल्य और भी प्रासंगिक हो जाते है।

बुद्ध अपने युग के धार्मिक एवं आध्यात्मिक आन्दोलन के सूत्रधार तथा महान समाज सुधारक थे, इसलिए उनके उपदेशों में अहिंसा, प्रेम, करूणा, दया, सहानुभूति, मैत्री, परोपकार आदि मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक आदर्शों का सुन्दर समन्वय है। बुद्ध के मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों की सार्वभौमिकता इतनी व्यापक है कि यदि आज उनके आदर्शों का समाज में मनुष्य पूर्णतः पालन करे तो एक आदर्श मानव जीवन के साथ साथ एक आदर्श समाज और धर्म का निर्माण कर सकता है।[1] भगवाान बुद्ध की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को सुखमय बनाना है, बुद्ध ने प्रकृति के नियमों का गहन अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि जो नियम बाहर वातावरण में काम कर रहे हैं वही हमारे शरीर के अंदर भी काम कर रहे हैं। मानव शरीर में सभी लोक समाए हुए हैं। मानव जीवन की मूल समस्या है कि राग, द्वेष, मोह, घृणा, लालच और भय के विकारों से कैसे छुटकारा पाया जाए।''[2] यही विकार आपसी लड़ाई, एक–दूसरे के साथ युद्ध, आर्थिक असमानता, शोषण–अत्याचार, भेद–भाव, हिंसा और आंतकवाद को जन्म देते हैं। यह ऐसी मूलभूत समस्याएं हैं जो हर युग में रहेगी। केवल उनका रूप और स्थान बदलते हैं। ये समस्याएं जितनी बुद्ध के समय में थी, आज उससे भी ज्यादा हैं। दुनिया को आज युद्ध की नहीं, बुद्ध की जरूरत हैं।

विद्वत समाज के समक्ष एक सारगर्भित शोध पत्र के रूप में– ''**वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बुद्ध के मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता**'' के विवेचन के पूर्व हमें यह जान लेना बेहद आवश्यक है कि आखिर मानवीय मूल्य या नैतिकता का

* शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म0प्र0)।

अभिप्राय क्या है? नैतिकता का आशय है– नीति के अनुसार। यानी हमारे विचार कर्म और व्यवहार सद्गुणों से प्रेरित हो और वे धर्म, संस्कृति राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए हितकारी हों। आध्यात्मिक तत्वों व शक्तियों का संवर्धन करने वाले ऐसे विचारों, व्यवहारों व गुणों को नैतिकता कहते हैं। अत्यन्त विकट परिस्थितियों में भी आध्यात्मिक गुणों का पालन करते हुए अपने कर्म विशेष के प्रति जो सदाचरण कायम रख सके वहीं नैतिक है। ऐसा तभी संभव है जब मनुष्य अपने भीतर के अहंकार, स्वार्थ व स्वनिर्मित आत्मघाती भय से परे उठने की साधना करें। धर्म, राष्ट्र व संस्कृति को अपने जीवन की धुरी बनाये। परन्तु अफसोस की बात है कि आज हमारे समाज और जीवन के हर एक क्षेत्र में मानवीय मूल्यों का ह्रास तेजी से हो रहा है। नशाखोरी, अपहरण, भ्रष्टाचार, बलात्कार और हत्या जैसे अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। इनकी वजह से देश का सम्यक् विकास नहीं हो पा रहा है। देश में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने के लिए जिन मूल बातों को समझने की आवश्यकता है उसके प्रति लोग सचेत नहीं है। बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग में इन मूल्यों का वर्णन किया है।

अष्टांगिक मार्ग के 3 भाग है– **ज्ञान, शील व समाधि**। ज्ञान या प्रज्ञा के अन्तर्गत दो मूल्य आते हैं– **सम्यक् दृष्टि** और **सम्यक् संकल्प**। शील में तीन मूल्य हैं– **सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म** और **सम्यक् जीविका**। समाधि में तीन मूल्य निहित हैं– **सम्यक् व्यायाम या उद्यम, सम्यक् स्मृति** और **सम्यक् समाधि**। मनुष्य के नैतिक जीवन के लिए इन मूल्यों का अनुशीलन अनिवार्य है।

सम्यक् दृष्टि या ठीक दृष्टि का मतलब मोह माया का त्याग कर उचित दृष्टि रखना है। **सम्यक् संकल्प** या ठीक संकल्प से आशय उचित वस्तुओं का संकल्प करने से है। **सम्यक् वाक्** या ठीक वचन का तात्पर्य है– सत्य भाषण करना। इसी प्रकार **सम्यक् कर्मांत** का आशय है– अच्छे कर्म करना। **सम्यक् आजीव** का मतलब ईमानदारी से जीविका चलाना है। **सम्यक् व्यायाम** से आशय समुचित उद्यम से है। **सम्यक् स्मृति** या ठीक स्मृति से आशय है– उचित वस्तुओं का सदैव स्मरण करना। जबकि **सम्यक् समाधि** या ठीक समाधि का तात्पर्य चित्त को एकाग्रता प्रदान करने से है। इस प्रकार बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से मानवीय मूल्यों के विकास पर जोर दिया है।

अष्टांग के अतिरिक्त महात्मा बुद्ध ने नैतिक आचरण के लिए दस शील भी बतलायें। उनके दस शील इस प्रकार थे – 1. **अहिंसा,** 2. **सत्य,** 3. **अस्तेय (चोरी न करना),** 4. **अपरिग्रह (सम्पत्ति का परित्याग),** 5. **ब्रम्हचर्य व्रत,** 6. **संगीत और नृत्य का त्याग,** 7. **अंजन, फूल और सुवासित द्रव्यों का त्याग,** 8.**असामयिक भोजन का त्याग,** 9. **सुखद शय्या का त्याग,** 10. **कामिनी और कंचन का त्याग।**

उक्त शीलों में प्रथम पांच गृहस्थियों को करना चाहिए। साधु–महात्माओं और भिक्षुओं को समस्त शीलों का पालन करना अनिवार्य था। बुद्ध के ये संदेश सबके लिए है। नर और नारी, युवा और वृद्ध, अमीर और कंगाल, सभी समान रूप से उन पर आचरण कर सकते है।

अंहिसा के पालन मे बुद्ध ने बैर भाव का पूर्णतया त्याग बताया है। बुद्ध की मान्यता थी कि इस संसार मे बैर को बैर से दूर नही किया जा सकता है । बल्कि अबैर या मैत्री से ही बैर को शांत किया जा सकता है।[3] आज समाज मे नैतिक पतन,अराजकता, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, चोरी, बेइमानी, अन्तर्कलह आदि चरम पर हैं। आज के ऐसे मानवीय एवं सामाजिक जनजीवन के लिए बुद्ध के मानवतावादी आदर्श समाजकल्याण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है। वस्तुतः बुद्ध का उपदेश मानव को सन्मार्ग पर अग्रसर होने हेतु प्रेरित करने के लिए है। बुद्ध के शील

सिद्धांत एवं मैत्री ,करूणा, दया आदि सन्मार्ग की ओर अग्रसर करते है। प्रस्तुत सन्दर्भ में डॉ. हरिप्रसाद गुप्ता के अनुसार निम्नलिखित बुद्ध वचन अधिक उपयोगी है– ''चरित्रवान बनो और दूसरों का भला करो। व्यक्ति के चारित्रिक उत्थान के माध्यम से ही सामाजिक एवं नैतिक कर्त्तव्यों का पालन पूरा किया जा सकता है।''[4] यह तभी संभव है जब मानव का चारित्रिक उत्थान एवं विकास सकारात्मक रूप से हो। बुद्ध इस दृष्टि से मानवता के सर्वश्रेष्ठ अग्रदूत है।

बुद्ध का मानना था कि नैतिक मूल्यों के विकास के प्रति मनुष्य को हमेशा सचेत रहना चाहिए और लालच को काबू में रखना चाहिए। काम–भोगों में लिप्त नहीं रहना चाहिए। अपनी इच्छाओं को काबू में रखने का प्रयास हमेशा करते रहना चाहिए। अपनी आमदनी को चार भागों में बांट कर एक हिस्सा रोजमर्रा के घर खर्च में लगाना चाहिए, दूसरा–तीसरा हिस्सा अपने व्यापार–धंधे को बढ़ाने में लगाना चाहिए, चौथा हिस्सा वक्त–जरूरत के लिए बचाकर रखना चाहिए।''[5] आज के युग में जब आर्थिक वातावरण काफी बदल गया है, तब भी बुद्ध की उपरोक्त शिक्षा उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय में थी। केवल उपभोग और बचत का प्रतिशत बदल सकता है, मूलभूत सिद्धांत वही है।

गौतम बुद्ध ने अपने धम्म में समता और बराबरी पर बहुत जोर दिया। उन्होंने समाज में लोगों के बीच समानता की न केवल शिक्षा दी बल्कि स्वयं उस पर अमल किया। उन्होंने महिलाओं को दीक्षा का अधिकार दे कर भिक्खुणी बनने का मौका दिया और मानव दुनिया के इतिहास में पहली बार एक पृथक और स्वतंत्र भिक्खुणी संघ की स्थापना की। स्त्रियों को बराबरी का हक देने वाले भगवान बुद्ध विश्व के पहले धम्म गुरू बने। भिक्षुणी संघ की स्थापना कर गौतम बुद्ध ने नारी स्वतंत्रता को अभिव्यक्तिकत दी और उनके चहुँमुखी विकास का रास्ता प्रशस्त किया। यह ऐसा क्रांतिकारी कदम था जिससे स्त्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व, एंव उनके व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति करने का मौका मिला और दुनिया के इतिहास में पहली बार स्त्रियों को यह सिद्ध करने का मौका मिला कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलने में और आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त करने में स्त्रियां किसी भी तरह पुरूषों से पीछे नही हैं। दीक्षित होने का अधिकार मिलने से स्त्रियों को पहली बार घर के चौका बर्तन करने के अलावा अपनी आत्म–उन्नति करने के लिए साधना करने का मौका मिला और अपने मानवीय गुणों के चहुँमुखी और सर्वांगीण विकास का अवसर मिला।''[6] गौतम बुद्ध ने इस अवधारणा को तोड़ा कि स्त्रियां सिर्फ बच्चे पैदा करने के लिए होती है। उन्होंने इस अवधारणा को भी तोड़ा कि लड़का पैदा होना लड़की पैदा होने से बेहतर है। इससे समाज में स्त्रियों के मान–सम्मान में काफी वृद्धि हुई। बहुत सी भिक्खुणियों ने निर्वाण सुख का साक्षात्कार किया और अर्हत पद को प्राप्त हुई। मानव इतिहास में आज तक स्त्रियों को स्वतंत्रता, शिक्षा समानता और मान–सम्मान के लिए किसी ने भी उतना योगदान नहीं दिया, जितना कि अकेले गौतम बुद्ध ने।[7]

गौतम बुद्ध ने जन्म पर अधारित वर्णभेद एवं जातिभेद व्यवस्था का निषेध किया था। वर्णभेद एवं जातिभेद निषेध मूलक विचार सैद्धान्तिक स्तर तक ही सीमित नही थे बल्कि उनके इन विचारो की व्यवहारिकता भी थी। इस सन्दर्भ में सत्यकेतु विद्यालंकार जी का यह विचार उल्लेखनीय है कि ''महात्मा बुद्ध की दृष्टि में कोई व्यक्ति नीच या अछूत नही था। उनके शिष्यों मे ब्राहमण, क्षत्रिय, श्रेष्ठी, वैश्य,शूद्र, तथा नीच से नीच समझे जाने वाली जातियों के मनुष्य सब एक समान स्थान रखते थे।''[8] वस्तुतः वर्तमान में बुद्ध के वर्ण एवं जाति के निषेध मूलक विचारों के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है जिससे समाज में मानव समता स्थापित की जा सके। आज अणु शस्त्र की विध्वंसकारी क्रूरता और हिंसा का सामाना बुद्ध की करूणा अहिंसा ही कर सकती है। सभी प्रकार के पापों को न करने के लिए धम्मपद में

कहा गया है कि'' सभी पापों को न करना, पुण्यों का संचय करना, अपने चित्त को परिशुद्ध करना यह बुद्ध की शिक्षा है।''[9]

वास्तव में महात्मा बुद्ध के सम्पूर्ण दर्शन का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र का कल्याण है। वे प्रज्ञा एवं करूणा की साकार मूर्ति थे। उन्होंने संसार को दुःखों से पीड़ित देखा और अपना सम्पूर्ण जीवन दुःख निवारण का उपाय खोजने में लगा दिया। उनका धर्म **समानता, न्याय एवं प्रज्ञा** पर आधारित है। इसमें **भ्रातृत्व**, **मानवप्रेम** और **अपनत्व** है। उनका उपदेश सारे संसार के लिए था, क्योंकि उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य एक समान है। महात्मा बुद्ध समता के महान उपदेष्टा थे। उनका मानना था कि प्रत्येक स्त्री पुरूष को आध्यात्मिकता प्राप्त करने का समान अधिकार है। उन्होंने पुरोहित तथा अन्य जातियों के मध्य अंतर का उन्मूलन कर दिया। उनके अनुसार निम्नतर लोग भी उच्चतम उपलब्धियों के हकदार हैं। उन्होंने निर्वाण के द्वार हर किसी के लिए खोल दिये। उनका कहना था कि मानव ईश्वर से तो प्रेम करता है, लेकिन अपने बन्धु मानव के सम्बन्ध में सबकुछ भूल जाता है। जो मनुष्य ईश्वर के नाम पर अपने प्राण दे सकता है, वह पलटकर ईश्वर के नाम पर अपने बन्धु मानव की हत्या भी कर सकता है। संसार की यही स्थिति है। महात्मा बुद्ध ने ईश्वर को नहीं मानव मात्र को महत्व दिया है। उनके मत में मानव को मानव के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए, तभी विश्व में भ्रातृभाव एवं समरसता कायम हो सकती है। उन्होंने सारे पुरोहितों एवं सिद्धांतो तथा आचारों को नकार दिया। वे चाहते थे कि मनुष्य स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो एवं स्वावलम्बी बने। वस्तुतः बुद्ध मानव एकता के पक्षधर थे और चाहते थे कि मानवीय भेदभाव दूर हो, क्योंकि मनुष्य भी नीम, जामुन, बबूल की तरह एक जाति है। आज के युग में जब धूर्त, दुष्ट एवं निशाचर मानव एकता को समाप्त करने के लिए तरह–तरह के षड़यन्त्र रच रहे हैं, तब महात्मा बुद्ध के उपदेश ही याद आते है। वस्तुतः उन्होंने मनुष्य मात्र को एक जाति का माना और उसका एक मात्र धर्म मानवता को माना। उन्होंने न केवल एक देश के वरन् सम्पूर्ण विश्व के मानव मात्र के कल्याण की बात की।

इस प्रकार हम देखते है कि बौद्ध धर्म में नैतिकता के सारे तत्व विराजमान है। बौद्ध धर्म में पूर्ण व्यपकता है । बुद्ध की शिक्षा युद्ध व हिंसा के लिए अनुशासन है। बुद्ध का अहिंसा एवं मैत्री का सिद्धान्त इतना उपयोगी है कि इससे समाज मे व्याप्त विषमता को मिटाकर एकता को प्रतिपादित किया जा सकता है। यहाँ पर बुद्ध का यह वचन उल्लेखनीय है कि ''प्राणिमात्र को वैसा ही प्यार दो जैसा स्वयं अपने को देते हो।''[10] इन सभी नैतिक आदर्शों के द्वारा ही वर्तमान समाज में व्याप्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक संकट का निदान और मानव महत्ता को स्थापित कर सम्पूर्ण विश्व समाज को एकता के सूत्र मे बाधने का महान कार्य किया जा सकता है।[11] इस प्रकार बुद्ध के मानवीय मूल्य आज भी निर्विवाद रूप से प्रासंगिक हैं।

संन्दर्भ सूची

1. उपाध्याय, रामजी : **धम्मपद** (हिन्दी अनुवाद) इण्डियन प्रेस, प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, विक्रम संवत् 2022, पृ. 7।
2. **दीघनिकाय, महावग्गटीका,** पृ. 161,225।
3. धर्मराक्षित,डॉ. मिक्षु : **धम्मपद** (1/5) ,प्रष्ठ 5।
4. गुप्ता, डॉ. हरिप्रसाद : **बुद्ध – विश्व मानवता का सन्देश,** पृ. 30।
5. सिन्हा, पारसनाथ (सं.), **बुद्धवंश अट्ठकथा,** पृ.53 और आगे।
6. मिनाभ, आई.पी., (सं.), **महाव्युत्पत्ति, बिम्बलिओथिका ऑफ इण्डो बुद्धिका**, सीरिज नं.98, पृ.2।
7. भट्टाचार्या, बी., **दि इण्डियन बुद्धिस्ट आइक्नोग्राफी,** पु.344–352।
8. विद्यालंकार , सत्यकेतुः **प्राचीन भारत का धार्मिक , सामाजिक एवं आर्थिक जीवन,** पृ. 61।
9. धर्मरक्षित , डॉ. मिक्षु : **धम्मपद** (बुद्धबग्ग /5) ,पृ. 60।
10. वर्मा, रघुनाथ प्रसाद : **भगवान बुद्ध** , पृ. 130।
11. शास्त्री, शान्ति भिक्षु : बोधि चर्यावतार (6/41) , पृ. 48।